खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 196–198, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9883 वैज्ञानिक लेख

पुराणों में समाहित इतिहास

रेखा त्रिपाठी
पता– 5, नवीन मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
rekha.akt@gmail.com

प्राप्त तिथि–31.07.2017, स्वीकृत तिथि–27.09.2017

सार– पुराणों में प्राचीन भारतीयता की झाँकी और तत्कालीन भारत के सर्वविध उत्कर्ष की झलक प्राप्त होती है। पुराण इस अकाट्य सत्य के द्योतक हैं कि भारत आदि जगद्गुरु था और भारतीय ही प्राचीन काल में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक उन्नति की पराकाष्ठा को पहुँचे थे। पुराण न केवल इतिहास हैं अपितु उनमें विश्वकल्याणकारी त्रिविध उन्नति का मार्ग भी प्रदर्शित किया गया है। ज्ञान के भण्डार और धर्म के मूल स्रोत वेद हैं। वेदों की महिमा अपार है पर उनकी शब्दावलि दुर्बोध और प्रतिपादन प्रक्रिया पर्याप्त जटिल है। इतिहास शब्द से महाभारत तथा वाल्मीकि रामायण एवं योगवासिष्ठादि ग्रन्थ भी अभिव्यक्त होते हैं। इन पुराणों से ही पूर्व के विद्वानों ने अनेक सुन्दर निबन्ध एवं प्रबन्ध ग्रन्थों की रचना की है, जो दैनन्दिन सभी कृत्यों से लेकर यावज्जीवन होने वाले विशेष प्रयोजन युक्त कर्म, संस्कार तथा यज्ञादि अनुष्ठान पर्व महोत्सव आदि के भी निर्देशक हैं।

बीज शब्द– पुराण, छान्दोग्य उपनिषद्, प्राचीन भारत, जगद्गुरु, सृष्टि, देवता।

History contained in Puranas

Rekha Tripathi
Add.- 5, Naveen Market, Kaiserbagh, Lucknow-226001, U.P., India
rekha.akt@gmail.com

Abstract- A glimpse of the ancient Indianness and the flourishing of India in ancient times give a glimpse of the whole of flourishing. Puranas are indicative of this irrefutable truth that India was the world famous and reached the peak of metaphysical, athletic and spiritual progress in ancient times. It is believed that the original source of knowledge and religion is Vedas. The glory of the Vedas is immense, but their vocabulary is unbearable and the process of rendering is quite complicated. But the Puranas alone make heart-felt to all the common sense in their simplest terms and with the help of plot style. Therefore, in all places, the Vedas have been agreed to understand through history, mythology. In the word of history, Mahabharata and Valmiki Ramayana and Yoga Vashastrai Granth are also included. From these mythologies, the scholars of the past have composed many beautiful essays and arrangements, who is also a director of special purposive karma.

Key Words- Ancient india, Glimpse, Puranas, mythology, Vedas, Ramayan, karma.

1. **प्रस्तावना–** ऐसा माना जाता है कि इस सृष्टि का केन्द्र है सृष्टि विद्या। इसीलिए पुराणों का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय सृष्टि विद्या को ही माना गया है। पुराणों में सर्ग बीज या जादि सृष्टि का पुराण है। प्रतिसर्ग प्रलय के बाद की पुनर्मुष्टि को कहते हैं। चूँकि पुराण का एक अर्थ है "पुराना" अर्थात् जो पहले हो चुका हो और जिस ग्रन्थ में वर्णन हो वही पुराण है। इसलिए पुराण इतिहास ही माना जाता है। वंश से देवताओं या ऋषियों के वंश वृक्षों के जिस साहित्य का सृजन हुआ, उसमें प्राचीन इतिहास की प्रचुर जानकारी हैं। इसीलिए छान्दोग्य उपनिषद्, महाभारत, श्रीमद्भागवत में इतिहास पुराण का उल्लेख है। हिन्दुओं के धार्मिक तथा तदतिरिक्त साहित्य में पुराणों का विशेष स्थान है। वेदों के बाद महाभारत के साथ इन्हें पंचम् वेद कहा गया है। इनका वाह्यरूप और अन्तःस्वरूप रामायण, महाभारत और स्मृतियों के समान है। इन पुराणों को समष्टिरूप से प्राचीन एवं समकालीन धार्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्कृति का विश्वकोष समझा जाना उचित है।

यस्मात्पुरा ह्यनितीदं पुराणं तेन हि स्मृतम्। निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते।।[1](वायु पुराण 1203)

ज्ञान के भण्डार और धर्म के मूल स्रोत वेद हैं। लेकिन, वेदों की शब्दावलि दुर्बोध और प्रतिपादन प्रक्रिया पर्याप्त जटिल है। उन्हें निरुक्त, ब्राह्मणग्रन्थ, श्रौतसूत्र तथा व्याकरण आदि अंगों, ऋषि, छन्द, देवता आदि अनुक्रमणी भाष्यों के आधार पर कठिनता से समझा जा सकता है। उनमें ग्रहों का संचार, समय की शुद्धि, खर्वा, त्रिस्पृशा आदि लक्षणों सहित प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों का सुस्पष्ट निर्देश नहीं है इसीलिए एकादशी, शिवरात्रि आदि व्रतों का माहात्म्य ग्रहण आदि

विशिष्ट पर्वों के कृत्य 'पुराण कथांक से और दर्शन शास्त्रों के सूक्ष्मज्ञान तथा पञ्चरात्र आदि वैष्णव, शैव, शाक्तादि आगमों के प्रतिपाद्य विषय स्पष्ट रूप से उपदिष्ट नहीं हैं किन्तु पुराणों में समस्त वेदार्थ सहित सभी विषय, सभी वेदांग एवं धर्म कृत्य, देवोपासना विधि, सदाचार के उपदेश और कथा सहित वेदान्त, सांख्य प्रक्रियाओं को बताने का प्रयत्न है।[2]

2. **पुराणों में कथानक सरल–** परन्तु पुराण अकेले ही उनके समस्त अर्थों को सरल शब्दों में और कथानक शैली के सहारे सामान्य बुद्धि वाले को भी हृदयंगम करा देते हैं। इसीलिए सभी स्थानों पर वेदों को इतिहास, पुराण के द्वारा समझने की सम्मति दी गयी है। इतिहास शब्द से महाभारत तथा वाल्मीकि आदि रामायण एवं योग वासिष्ठादि ग्रन्थ भी अभिव्यक्त होते हैं। पुराण शब्द से स्कन्द आदि अट्ठारह महापुराण, विष्णु धर्मोत्तरादि उपपुराण तथा नीलमत, एकाम्रादि स्थलपुराण भी गृहीत होते हैं। इन पुराणों से ही ऋषियों ने अनेक प्रबन्ध ग्रन्थों की रचना की है, जो दैनन्दिन कृत्यों से लेकर यावज्जीवन होने वाले विशेष प्रयोजन युक्त कर्म, संस्कार तथा यज्ञादि अनुष्ठान, पर्व महोत्सव आदि के निर्देशक हैं। कृष्णद्वैपायन भगवान् वेदव्यास जी ने परिश्रम से वेदों को शाखा, प्रशाखा, ब्राह्मण, कल्पसूत्र, निरुक्त आदि की प्रक्रियाओं में विभाजन करके भी जब पूर्णलोकोपकार में सफलता नहीं देखी तब उन्होंने विशेष ध्यानस्थ होकर भागवतादि पुराणों, महाभारतादि इतिहासों की रचना कर वेदों के गूढ़तम सन्देश को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प किया। उन्हीं की भास्वती कृपा से समुद्भूत समग्र पुराण राशि हमारे सामने उपस्थित होकर विश्वकल्याण में निरन्तर प्रवृत्त है। यह पुराण वांग्यमय सूक्ष्म विचार पर वर्तमान समस्त विश्व साहित्य की अपेक्षा सभी प्रकार शुद्ध, सभ्यभाषायुक्त, सुबोध कथाओं से समन्वित और मधुरतम पदविन्यासों से समलंकृत है।

3. **पुराणों की भौगोलिक पृष्ठभूमि–** पुराणों की भौगोलिक पृष्ठभूमि में प्रथम मनु के विवरण में उनके राज्यान्तर्गत जगत् का वर्णन आता है। काल निर्धारण के समान इस वर्णन का बहुत सा भाग काल्पनिक है। वर्णन इस प्रकार है कि इसमें सात समकेन्द्रिक द्वीप हैं। प्रत्येक द्वीप एक–एक समुद्र से घिरा है। इन समुद्रों में कोई घृत का समुद्र है, कोई दूध का। इस प्रकार विविध द्रव्यों के समुद्र हैं। इन द्वीपों में मध्यवर्ती जम्बूद्वीप है, जिसके चारों ओर क्षारसमुद्र है। जम्बूद्वीप का मुख्य भाग भारतवर्ष है। इसके उत्तर भाग में हिमालय है और दक्षिण में समुद्र। इसमें सात मुख्य पर्वत हैं। महेन्द्र, मलय, सह्य, शक्तिमान ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र। भारत के पूर्व ओर किरात रहते थे। पश्चिम ओर यादव और मध्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। हिमालय तथा सप्त समुद्रों से निकलने वाली नदियों के नाम तथा विविध प्रदेशों में रहने वाली विविध जातियों के नाम हैं। महाभारत तथा अन्य ग्रन्थों में भी ऐसी ही नामावलियाँ हैं। यवन, शक और पींवों का जिक्र है। ये लोग ईसा के पूर्व दूसरी और पहली शताब्दियों में भारतवर्ष में आये। हूणों का भी पुराणों में वर्णन यह बताता है कि भौगोलिक नामावलियाँ समय–समय पर नाम जोड़कर पूरी की गयी हैं। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की बहुना अखिल विश्व के धारण, पोषण, संघटन, सामन्जस्य एवं एकमत्य का सम्पादन करने वाला एकमात्र पदार्थ है "धर्म"। धर्म का सम्यक् ज्ञान अधिकारी व्यक्ति को अपौरुषेय वेदवाक्यों एवं तदनुसारी पुराणादि आर्षधर्मग्रन्थों द्वारा ही सम्पन्न होता है। सभी परिस्थितियों में सभी प्राणी धर्म का शुद्ध ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। ऐसे लोग जिनके अन्तःकरण में कभी रागद्वेषादि का प्रभाव नहीं पड़ता, वे ही सही माने में धर्म का तत्त्व समझ सकते हैं। मनु का वचन इस प्रकार है–

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत।।[3] (मनु 2–1)

4. **पुराण की साहित्यिक परिभाषा–** पुराणों की परिभाषा कुछ पुराणों में की गयी है और उसके पाँच लक्षण हैं।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।[4] (24–हिन्दू संस्कृति अंक से)

सर्ग(सृष्टि), प्रतिसर्ग(लय और पुनः सृष्टिद्ध, वंश(देवताओं की वंशावलि), मन्वन्तर(मनु के काल विभाग) और वंशानुचरित(राजाओं के वंशवृत्त) पुराण के पाँच लक्षण हैं। उपस्थित पुराणों में कोई भी पूर्णरूप से इस परिभाषा के अनुरूप नहीं है। यह पंचलक्षण उपस्थित पुराणों का बहुत ही छोटा अंश है। मालूम होता है कि धर्मानुशासन पुराणों के मूल उद्देश्यों में नहीं था। पीछे की रचनाओं को पुराण की परिभाषा में लाने के लिए स्वयं पुराणों ने ही यह कहा है कि पंचलक्षण केवल उपपुराण के लिए हैं। महापुराण होने के लिए तो उसमें दस लक्षण होने चाहिए। इन दस में पंचलक्षण के अतिरिक्त अन्य लक्षण हैं– वृत्ति, (रक्षा) (ईश्वरावतार) मुक्ति हेतु (जीव) और अपाश्रय (ब्रह्म)।

सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृत्ती रक्षान्तराणि च। वंशो वंश्यानुचरितं संस्था हेतुरपाश्रयः।।
दशभिर्लक्षणैर्युक्तं पुराणं तद्विदो विदुः। केचित्पंचविधं ब्रह्मन् महदल्पव्यवस्थया।।[5](श्रीमद्भागवत 11–7–9–10)

पुराणवित् पुराण को इन दस लक्षणों से युक्त मानते हैं। सर्ग, विसर्ग, वृत्ति, रक्षा, मन्वन्तर, वंश, वंशानुचरित, संस्था, हेतु और अपाश्रय। कोई पाँच ही लक्षण मानते हैं। महदल्पव्यवस्था से ऐसा होता है अर्थात् महापुराणों के दस और उपपुराणों के पाँच लक्षण होते हैं। मत्स्यपुराण ने इसमें ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य और रुद्र की स्तुति, सृष्टि का लय और स्थिति, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन विषयों को और जोड़ा है।

ब्रह्मविष्ण्वर्करुद्राणां माहात्म्यं भुवनस्य च। ससंहारप्रदानां च पुराणे पंचवर्णके।।
धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चौवात्र कीर्त्यते। सर्वेष्वपि पुराणेषु तद्विरुद्धं च यत्फलम।।[6](मत्स्य पुराण 53–66–7)

ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य और रुद्र का माहात्म्य, सृष्टि के लय और स्थिति का माहात्म्य, पाँच विषयों का वर्णन करने वाले पुराण में वर्णित हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का कीर्तन है। यह सब पुराणों में है और इसके विरुद्ध जो कुछ है, उसका भी फल वर्णित है। आदि अक्षर 'म' वाले 2 'भ' वाले 2 'ब्र' वाले 3 'व' वाले 4 'ना' वाला 1 'लि' वाला 1 'प' वाला 1 फिर अग्निपुराण 1 'कू' वाला 1 'स्क ' वाला 1 और गरुड़पुराण 1। उपपुराणों की गणना में एकरूपता नहीं है। कई स्थानों में मिली हुई इनकी नामावलियों को मिलाकर देखने से 18 उपपुराण निश्चित हैं, सनत्कुमार, नरसिंह, नन्द, शिवधर्म, दुर्वासा, नारदीय, कपिल, वामन, उशनस, मानव, वरुण, कलि, महेश्वर, साम्ब, सौर, पराशर, मारीच और भार्गव। कौन पुराण ठीक–ठीक पंचलक्षणयुक्त हैं और कौन नहीं हैं, यह देखकर इनके प्राचीन और प्राचीनोत्तर दो वर्ग किये जा सकते हैं। अठारह पुराणों में दस में शिवस्तुति है, चार में ब्रह्मा की और दो में देवी तथा हरि की है। पुराणों में वर्णित विषयों के अनुसार पुराणों के छः वर्ग किये गये। प्रथम वर्ग में साहित्य का विश्वकोष है। इसमें गरुड़, अग्नि और नारदपुराण आते हैं। द्वितीय वर्ग में मुख्यतः तीर्थों और व्रतों का वर्णन है। इसमें पप्र, स्कन्द और भविष्य पुराण हैं। तृतीय वर्ग ब्रह्म, भागवत और ब्रह्मवैवर्तपुराणों का है। चतुर्थ वर्ग में, जो ऐतिहासिक कहलाता है, ब्रह्माण्ड और वायुपुराण आते हैं। साम्प्रदायिक साहित्य का पंचम वर्ग है। इसमें लिंग, वामन और मार्कण्डेयपुराण आते हैं। अन्त में षष्ठवर्ग उन वाराह, कूर्म और मत्स्यपुराणों का है। जिनके पाठों का संशोधन होते–होते मूल पाठ है। तमिल ग्रन्थों में पुराणों के ये पाँच वर्ग हैं। ब्रह्मा ब्रह्म और पप्रऋ (2) सूर्य ब्रह्मवैवर्तऋ (3) अग्नि अग्निऋ (4) शिव शिव, स्कन्द, लिंग, कूर्म, वामन, वराह, भविष्य, मत्स्य, मार्कण्डेय और ब्रह्माण्डऋ और (5) विष्णु नारद, भागवत, गरुड़ और विष्णु।[7,8]

5. **पुराणों का समय/निष्कर्ष–** कुछ समय पहले यह सोचा जाता था कि संस्कृत साहित्य में पुराणों का निर्माण सबसे पीछे हुआ और विगत एक सहस्र वर्षों के अन्दर की यह सारी रचना है। पर पुराणों के जो उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। उनसे यह विचार बदल जाता है। कोई सन्देह नहीं कि सब पुराण अपने वर्तमान रूप में किसी एक ही समय में नहीं रचे गये हैं। पुराणों में घटाना–बढ़ाना, संशोधन करना, मिश्रण करना इत्यादि क्रम बराबर चलता रहा है। विगत दो सहस्र वर्षों से भी अधिक काल से रामायण और महाभारत के साथ पुराण भी भारतीय जीवन को अपने विविध आदर्श पुरुषों के चरित्रों से अनुप्राणित और प्रभावित करते चले आ रहे हैं। राम, कृष्ण, हरि, शिव आदि नाम आज भी करोड़ों मनुष्यों के जीवनधन हैं। दीन दुखी जनता के छिन्न–विच्छिन्न स्नायुओं और भग्न हृदयों को बल देकर तथा उनमें आशा विश्वास का संचार कर पुराणों ने उन्हें उबारने का काम किया है।

सन्दर्भ

1.ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः। इतिहासपुराणं च पंचमो वेद उच्यते।। (वायु पुराण 12/03) गीता प्रेस, गोरखपुर, विष्णुपुराण 1/3–20–21 और 3/1 तथा 3/2 एवं 3/14/6 एवं ब्रह्माण्डपुराण, 1–1–173
त्रिपाठी श्रीकृष्णमणि, पुराण तत्त्व मीमांसा 1961, मु0पृ0 24–39।
2.ऋग् यजुः, साम, अथर्व नाम के चार वेद कहे गये हैं। इतिहास–पुराण पंचम वेद कहा जाता है। (ऋग्वेद, षष्ठम मंडल,सूक्त 89, मंत्र 8) गीता प्रेस, गोरखपुर।
ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। उच्छिष्टाब्जशिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।। (अथर्ववेद 11–7–24)
कृत्तिकादिषु ऋक्षेषु विषमेषु च यद्दिवः।
3. मनुस्मृति 2–1–17 खंड तृतीय एवं दृष्टार्कपतितं ज्ञेयं तग्द्राग्डं दिग्गजोज्झितम्।। (विष्णु पुराण, 2–9–15, पृ0 138)
द्रष्टव्य इण्डियन हिस्टारिकल क्वार्टर्ली, भाग 7 कलकत्ता, 1931, मु0पृ0 370–371 में दी एज ऑव दी विष्णुपुराण शीर्षक टिप्पणी। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1993 पृ0 46। भण्डारकर, द्रष्टव्यक्त भरतं की लेख पत्रिका 1936–37 भाग 18/103 में।
4. हिन्दू संस्कृति अंक, 1951, गीता प्रेस गोरखपुर, खंड–25, पृ0 289।
बृहद्देवता 8–11–10–192, शतपथ ब्राह्मण, 13–4–3–12, छान्दोग्योपनिषद्, 7–1–2।
5. श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, 11–7–9–10, मत्स्य पुराण, काशी नागरी प्रचारिणी, 1964, 53–66–7।
ततःकुम्भं च मीनं च राशे राश्यन्तरं द्विज।। (विष्णु, पुराण 2–8–28)
6. शर्मा, गिरधर चतुर्वेदी(विक्रमाब्द 2027) पुराण परिशीलन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, मु0पृ0 136–143, गीता प्रेस गोरखपुर, मु0पृ0 311–312।
7. भट्टाचार्य, श्री तारापद, वास्तुविद्या के अपने अनुशीलन बंदवदे वप्दिकपंद (92) एवं (93)।
8. मिश्र, गिरिजा शंकर प्रसाद(2000) प्राचीन भारतीय इतिहास दर्शन तथा इतिहास लेखन।